इकाई 11 जापान में आधुनिकीकरण-II

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 जापान और पश्चिमी दुनिया
- 11.2.1 तोकुगावा काल
- 11.2.2 मेजी काल
- 11.2.3 बुद्धिजीवियों की भूमिका

11.3 शिक्षा और विकास
- 11.3.1 प्रारंभिक प्रयास
- 11.3.2 मंत्रिमंडल के अधीन सुधार

11.4 रूढ़िवादी और शैक्षिक सुधार
- 11.4.1 शाही राजाज्ञा
- 11.4.2 रूढ़िवादी तर्क
- 11.4.3 रूढ़िवादियों का प्रभाव
- 11.4.4 समाजवादी दृष्टिकोण
- 11.4.5 अखिल एशियावाद

11.5 सारांश
11.6 शब्दावली
11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद :

- आप पश्चिमी विचारों को जानने के लिये कुछ जापानी बुद्धिजीवियों द्वारा किये गये प्रयासों के बारें में जान सकेंगे,
- आप यह सीख सकेंगे कि पश्चिमी विचार जापान में कैसे आये और रूढ़िवादियों की उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया रही,
- आपको उस प्रक्रिया की जानकारी मिलेगी जिसके जरिये पश्चिमी विचारों का सदुपयोग जापान को एक आधुनिक राष्ट्र राज्य के रूप में विकसित करने के लिये किया गया, और
- आप शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिये अपनाये गये विभिन्न उपायों को समझ सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

इस इकाई में जापान में विचारों और विचारधाराओं के क्षेत्र में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर चर्चा की गयी है। **मेजीकालीन** जापान के बदलाव के लिये तथा एक केंद्र-केंद्रित राज्य की रचना के लिये नयी राजनीतिक और आर्थिक संस्थाओं का निर्माण ही पर्याप्त नहीं था। जापानी जनता को पश्चिमी राष्ट्रों से आने वाले नये विचारों के साथ भी समझौता करना था। व्यापक स्थितियों का समावेश करने वाले ये विचार कई देशों से आये, जिनमें इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी और अमेरिका प्रमुख थे। इस इकाई में इस बात पर विचार किया गया है कि **मेजीकाल** के बुद्धिजीवियों ने इन नये विचारों को कैसे समझा और कैसे उनका उपयोग किया, और इन पश्चिमी विचारों पर प्रतिक्रिया क्या हुई। इस काल के दौरान जापानी जीवन को संगठित करने के लिये देशज स्रोतों की ओर लौटने की एक प्रभावी और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति उभर कर सामने आयी।

एक आधुनिक समाज के लिये आवश्यक पश्चिमीकरण की आवश्यकता और उसकी सीमा से संबंधित बहसें शिक्षा व्यवस्था और उन प्रयोगों में प्रतिबिम्बित हुई जो नयी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये इस शिक्षा व्यवस्था को सुधारने और बदलने के लिये किये गये।

शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ, मेजी काल के अनेक बुद्धिजीवी और नेता नागरिकता बोध बनाने के विषय में चिंतित थे। इस इकाई में इस पहलू पर भी विचार किया गया है।

11.2 जापान और पश्चिमी दुनिया

इस भाग में हम **तोकुगावा** और **मेजी** कालों के दौरान जापान और पश्चिमी दुनिया के संबंधों पर चर्चा कर रहे हैं।

11.2.1 तोकुगावा काल

जापान तोकुगावा काल में भी विदेशी संपर्क से पूरी तरह कटा नहीं था। जैसा कि हम खंड 1 और 2 में देख चुके हैं, जापान ने डच व्यापारियों को नागासाकी से हट कर स्थिति दोशिमा के मानव निर्मित द्वीप में आवास के सीमित अधिकार दे दिये थे। इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि **तोकुगावा** काल के दौरान ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों में से दो स्रोत बाहरी थे, ये थे — चीन और हालैंड। पश्चिमी ज्ञान के इस अनुभव ने एक आधार दिया जिससे **मेजी काल** के बुद्धिजीवी पश्चिम से और भी बहुत कुछ सीख सके।

अनुवादों के जरिये जापानी न केवल इन देशों के बारे में, बल्कि सामान्य विदेशी मामलों के बारे में जानकारियों के संपर्क में आये। किताबों का आयात किया गया और डचों को विश्व की स्थिति पर नियमित जानकारी देने को नियुक्त किया गया। चीनी किताबों से ज्ञानार्जन की उनकी थारती के कारण जापानी डच कृतियों से जल्दी ही सीख गये और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक विद्वानों की एक मजबूत और सक्रिय परंपरा बन गयी थी जिन्हें दुनिया की जानकारी थी। इन विद्वानों में दुनिया को वास्तव में देखने की ललक अब बढ़ रही थी और पेरी के काले जहाजों के आते ही वे पश्चिमी शक्ति के स्रोतों का अध्ययन करने के रास्ते जानने के लिये उत्सुक हो उठे।

राजभक्त शिक्षक योशुदा शोइन (1830-59) ने मेजी काल के अनेक नेताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ा। वह एक कट्टर राष्ट्रवादी था और उसे तोकुगावा शासन में उसके उग्रवादी विचारों के लिये प्राणदंड दिया गया। उसने पेरी के जहाज पर छिप कर निकल जाने का प्रयास किया लेकिन उसके प्रयास को नाकाम कर दिया गया। बाद में एक और बुद्धिजीवी नीजिमाजो छिप कर देश से बाहर निकल जाने में सफल रहा। उसकी मदद उन कुछ लोगों ने की जो दुनिया देखने की उसकी आंकांक्षा की तीव्रता से प्रभावित हुए थे। उसने अमेरिका में पढ़ाई की और बाद में वह जापान में एक विश्वविद्यालय की स्थापना करके एक सम्माननीय व्यक्ति बन गया। इन दोनों ही व्यक्तियों के विचारों में बहुत भिन्नता थी, लेकिन वे दोनों ही पश्चिम को शक्ति का एक स्रोत मानते थे जिससे वे ज्ञान हासिल कर सकते थे और इस ज्ञान का उपयोग राज्य की बुनियाद बनाने में होना था।

व्यक्तिगत संपर्कों और यात्राओं में तो धीरे-धीरे वृद्धि हुई ही, बकुफु की ओर से भी सरकारी अभियान दल (मिशन) बाहर भेजे गये। 1860 में एक अभियान दल को अमेरिका जाने के लिये चुना गया। एक अधिकारी, ओगुरी तादामासा ने फ्रांसीसी मदद से योकोहामा और योकोसूका फाउंड्री (ढलाईघर) और पोत कारखाना बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रशांत महासागर को पार करने वाला सबसे पहला जहाज कानरिन मारू था और उस पर सवार था फुकुजावा युकिची।

फुकुजावा युकिची पश्चिमीकरण का सबसे प्रसिद्ध पोषक हुआ। पश्चिम का विवरण देने वाली उसकी किताबें आसान जापानी में लिखी गयी थीं, और वे सबसे अधिक बिकने वाली किताबें बन गयीं। दूसरे बकुफु अभियान दल यूरोप गये और विशिष्ट राजनायिक कामों पर यात्रा करते हुए भी उन्होंने पश्चिम के बारे में ज्ञान भी इकट्ठा किया और उनमें से कई ने तो पश्चिमी संस्थाओं और रीतियों की सिलसिलेवार छानबीन की। इस तरह, उन्होंने स्कूली व्यवस्था या व्यावहारिक राजनीति का अध्ययन किया और किताबें लिखीं। उदाहरण के लिये, फुकुजावा ने जो कुछ देखा उस पर विस्तार से लिखा और उसने न केवल पश्चिम के जुगाड़ी उपकरणों का, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संगठन का भी पूरे मनोयोग से अध्ययन किया। 1866-69 में छपी उसकी किताब ''पश्चिम की स्थितियां'' **(सैयो जीजो)** जानकारियों की खान है, लेकिन इसने एक नमूना भी दिया कि जापानी समाज को किस स्वरूप में तबदील किया जा सकता था। दूसरे देशों की यात्रा पर गये जापानियों ने अपनी किताबें लिखीं, लेकिन कई दूसरों ने पश्चिमी कृतियों का अनुवाद किया। एक सबसे लोकप्रिय अनुवाद नाकामुरा मासानाओ द्वारा सैमुएल स्माइल्स की कृति ''सेल्फ हेल्प'' (आत्म सहायता) का अनुवाद रहा।

11.2.2 मेजी काल

मेजी पुनर्स्थापना के बाद यात्रा और आसान हो गयी और उसे सक्रिय प्रोत्साहन भी दिया गया। नयी सरकार ने अपने सामने खड़ी समस्याओं के बावजूद, इवाकुरा अभियान दल भेजा जिसमें नयी सरकार के कई महत्वपूर्ण नेता शामिल थे। इसके सदस्यों में अनुभवी राजनायिक थे और इस अभियान दल का उद्देश्य पश्चिम के सभी पहलुओं का अध्ययन करना था। इसके सदस्यों ने कुछ क्षेत्रों पर अपना ध्यान केंद्रित किया उदाहरण के लिये, ओकुबो तोशीमीची ने कारखानों और मजदूरों के आवास वाली मलिन बस्तियों में घूम-घूम कर उद्योग और आर्थिक व्यवस्थाओं का अध्ययन किया।

जापानियों ने पूरी दुनिया में ज्ञान की खोज की। उनकी समझ जैसे-जैसे बढ़ती गयी, वे राष्ट्रों को अलग-अलग दर्जा देने लगे। उदाहरण के लिये :

- इंग्लैंड को औद्योगिक विकास का नमूना माना गया,
- प्रशा को सैनिक संगठन का,
- फ्रांस को पुलिस और शिक्षा व्यवस्था का, और
- अमेरिका को कृषि विकास का।

अपनी शिक्षा के लिये विदेशी कर्मचारियों को नियुक्त करना एक और तरीका था जिसके जरिये जापानियों ने पश्चिम से ज्ञान प्राप्त किया। प्रारंभ में जापानियों ने डचों से ज्ञान प्राप्त किया था, लेकिन बाद में उनकी जगह अंग्रेजों और फ्रांसीसियों ने ले ली, मेजी काल में, 1875 तक, जापानी सरकार में 520 विदेशी कर्मचारी थे। इस संख्या में धीरे-धीरे कमी आयी, निजी कंपनियों में विदेशी कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि आयी। 1897 में 760 ऐसे व्यक्ति थे। ये कर्मचारी विविध व्यवसायों में नियुक्त थे, जैसे शिक्षा, इंजीनियरिंग और अनेक तकनीशियन भी थे। यह एक दिलचस्प तथ्य है कि जापानी सरकार सबसे बढ़िया उपलब्ध विशेषज्ञता खरीदने के लिये खुले हाथ से खर्च करती थी। विदेशियों का वेतन उद्योग मंत्रालय के नियमित बजट का एक तिहाई और टोक्यो शाही विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत धनराशि का एक तिहाई होता था। इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार जिस ज्ञान को आवश्यक समझती थी उसे प्राप्त करने के लिये वह किस हद तक आर्थिक बोझ उठाने को तैयार थी। साथ ही बड़ी लागत ने शायद उन्हें तेजी से सीखने को उद्यत किया और इस पर लगातार जोर दिया जाता रहा। उदाहरण के लिये, इतो हिरोबूमी ने 1873 में एक भाषण में कहा था:

> ''यह आवश्यक है कि इस अवसर का उपयोग हम अपने आपको पूरी तौर पर प्रशिक्षित और शिक्षित करने के लिये करें ······ फिर वास्तव में हम विदेशियों के बिना अपना काम चलाने में समर्थ होंगे ······ इसलिए देश भर में सारे महत्वाकांक्षी युवा जम कर अपनी पढ़ाई में जुट जायें।''

लेकिन, पश्चिम से सीखने और उसकी नकल करने की आकांक्षा बेतुके स्तरों तक भी पहुंच चुकी थी। उदाहरण के लिये, पश्चिमी वस्तुओं के लिये दीवानगी का प्रतीक हाल ऑफ द डियर पेवेलियन के रूप में मिलता है जहां मेजी के कुलीन औपचारिक पश्चिमी लिबास में सजते थे, हैट पहनते थे, और बाल रूम नृत्य करते थे। लेकिन यह पश्चिमीकरण का एक मात्र पहलू नहीं था, और ज्यादतियां होने के बावजूद जापानियों में नया ज्ञान प्राप्त करने की गहन और गंभीर इच्छा थी।

11.2.3 बुद्धिजीवियों की भूमिका

उस समय का लोकप्रिय जापानी जुमला **बुमने कोइका** या सभ्यता और प्रबुद्धता उस समय की प्रवृत्ति का संकेत देता है। फरवरी 1, 1874 को तैंतीस बुद्धिजीवियों ने सभ्यता और प्रबुद्धता को बढ़ावा देने के लिये एक संस्था **मेरोकुशा** का गठन किया। इस संस्था में **मेजी** कुलीन वर्ग के अनेक प्रमुख सदस्य शामिल थे। इसका पहला अध्यक्ष, मोरी आरीनोरी, अमेरिका में जापान का पहला राजदूत था, उसने सरकार में शिक्षा मंत्री समेत कई हैसियतों में काम किया था। उसने इस संस्था की धारणा इसलिए बनायी क्योंकि उसे शिक्षा में रुचि थी और वह जापान में इसकी उन्नति के लिए तरीकों की तलाश में था।

इस संस्था के सदस्यों में विभिन्न बुद्धिजीवी थे। इसमें निशीमुरा शिगेकी जैसे कन्फ्यूशियसवादी मानवतावादी थे। निशीमुरा का तर्क था कि पश्चिम की सफलता की कुंजी नैतिकता में थी। नाकामुरा केऊ भी व्यक्तिगत नैतिकता और आत्मनिर्भरता पर जोर देता था और इसी कारण उसने जे. एस. मिल की ''ऑन लिबर्टी'' और सैमुएल स्माइल्स की ''सेल्फ हेल्प'' का अनुवाद किया।

कानो हिरोपूकी और त्सुदा मासामिची और नीशी अमाने जैसे बुद्धिजीवी समाज की संघटित प्रकृति की बात

करते थे। उनका तर्क था कि पश्चिम की शक्ति इस तथ्य में निहित थी कि इसका समाज विवेक के आधार पर निर्मित और संचालित था। लेकिन उनके दृष्टिकोणों में काफी अंतर था। उदाहरण के लिये, कातो शाही संस्था के महत्व के पक्ष में था, जबकि त्सुदा प्रबुद्ध वैधानिक और नौकरशाही संस्थाओं के विकास का पक्षधर था।

एक और सदस्य फुकुजावा युकिची ही एक मात्र ऐसा व्यक्ति था जो जानबूझकर सरकार से बाहर रहा और एक स्वतंत्र बुद्धिजीवी के रूप में काम करता रहा। उसने केओ विश्वविद्यालय स्थापित करने में मदद की। उसका तर्क था कि लोगों को अभी भी (अपने अंदर) स्वाधीनता का बोध विकसित करना था और इस कारण सरकार अभी भी तानाशाह बनी हुई थी क्योंकि ''लोग अभी भी शक्तिहीन अज्ञानी थे''। वह सरकार की यह कह कर आलोचना करता था कि सरकार ''मात्र एक ऐसा स्थान थी जहां कई बुद्धिमान लोग एक मूर्ख व्यक्ति की तरह काम करने को एकत्र होते हैं।''

दूसरी ओर मोरी आरिनोरी इस बात पर दृढ़ था कि सभी सक्षम लोगों को सरकार के लिये काम करना चाहिये और राष्ट्र की उन्नति में सहायक होना चाहिए। उसने वाणिज्यिक संस्थान स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसने बाद में हितोत्सुबाशी विश्वविद्यालय का रूप लिया।

प्रबुद्धता और सभ्यता की तलाश पश्चिमी मूल्यों और विचारों को अपनाने का प्रयास था। ये आदर्श 1868 के शपथ घोषणा पत्र में व्यक्त हुए थे, जिसमें लिखा गया था:

> ''अतीत की कुप्रथाओं को त्यागा जायेगा और सब कुछ प्रकृति के उचित नियमों पर आधारित होगा। ज्ञान की तलाश पूरे विश्व में की जायेगी जिससे शाही राज की बुनियाद को मजबूत किया जा सके।''

बुनमे काईका के दौर में पश्चिम के तमाम उदारवादी विचारों को लाया गया और यह काम उएकी एमोरी और नकाए चोमिन जैसे जनाधिकार समर्थक बुद्धिजीवियों ने किया। फिर भी, इन विचारों पर जापानी संस्कृति और मूल्यों के प्रति एक अस्वीकारी रवैये की प्रधानता थी। सभ्यता को नियंत्रित करने वाले नियमों-कानूनों को सार्वभौमिक समझा जाता था और जापान को पश्चिमी समाजों की तरह आगे बढ़ने के लिये इन नियमों का सीखना भर पर्याप्त था। इन बुद्धिजीवियों ने जो संदेश ग्रहण किया था वह यह था कि सारे सभ्य लोग अपनी मानवता में एक हो जायेंगे।

बुद्धिजीवी उस विज्ञान और प्रौद्योगिकी का ज्ञानार्जन करने के विचार में भी लिप्त थे जो आधुनिक थी और राष्ट्र के विकास में भी सहायक होती । उनके विचारों का आधार मनुष्यों की समानता भी थी। फुकुजावा ने अपनी किताब ''डिसएडवांसमेंट ऑफ लर्निंग'' की शुरुआत इन शब्दों से की : ''ईश्वर ने मनुष्य को मनुष्य के ऊपर नहीं बनाया, न ही मनुष्यों को मनुष्यों के ऊपर रखा''। आत्मनिर्भर व्यक्तियों की इसी दृष्टि के कारण ये लेखक अंधाज्ञाकारिता और दासतापूर्ण नकल की आदतें डालने वाली सामंती रीतियों या प्रथाओं के बने रहने के आलोचक थे। इन मूल्यों की निरंतरता पारिवारिक व्यवस्था के कारण थी। बुनमे काईका बुद्धिजीवी एक ऐसे मुक्त समाज के पक्ष में थे जहां प्रतिभा को उचित प्रतिदान मिले और जहां अंतर्राष्ट्रीयता का सिद्धांत व्याप्त हो। राष्ट्रीय मतभेद धीरे-धीरे कम कर दिये जायेंगे। तागुची उकिची यह लिख सका कि तब तक टोक्यो में रहने वाला कोई अंग्रेज उतना ही टोक्योवासी होगा जितना कि टोक्यो में रहने वाला कागोशिमा का कोई व्यक्ति।

बोध प्रश्न 1

1) आप फुकुजावा युकिची के विषय में क्या जानते हैं? लगभग पांच पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

2) जापानी बुद्धिजीवियों द्वारा पश्चिमी विचारों की तलाश के क्या कारण थे। उन्होंने पश्चिम से किस तरह ज्ञानार्जन किया। लगभग 15 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

11.3 शिक्षा और विकास

मेजी कालीन जापान को कई शिक्षा व्यवस्थाएं तोकुगावा काल से विरासत में मिलीं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें शिक्षा के प्रति एक ऐसा रवैया विरासत में मिला जो शिक्षा के महत्व और आवश्यकता को समझता था। तोकुगावा काल के दौरान देश में मंदिर स्कूल (तेराकोया) फैले हुए थे जहां लिखना, पढ़ना और गणित सिखाये जाते थे। इन स्कूलों का उद्देश्य एक ऐसा बुनियादी ज्ञान देना था जो छात्रों को समाज में प्रभावी ढंग से काम करने के योग्य बनाये। वे "ए प्राइमर ऑन बिजनेस" जैसी किताबों का प्रयोग करते थे। हान द्वारा संचालित ऐसे स्कूल थे जिनमें बड़ी संख्या में सैमुराई आते थे और जहां शिक्षा व्यावहारिक की अपेक्षा साहित्यिक अधिक होती थी। बकुफु ने शोहेको की भी स्थापना की थी जहां कानून, चीनी क्लासिकों (प्राचीन ग्रंथों) और गणित की शिक्षा दी जाती थी। बकुफु द्वारा स्थापित काईजेजो (विदेशी ज्ञानार्जन का स्कूल) पश्चिमी संबंधी ज्ञान का स्रोत बन गया और इससे इस तथ्य का प्रमाण मिलता है कि शासक ताकतों को बाहरी दुनिया के अध्ययन की चिंता थी।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक 250 हान स्कूल स्थापित हो चुके थे। डच प्रभाव के फलस्वरूप पश्चिमी ज्ञानार्जन के स्कूलों की स्थापना हुई। **तोकुगावा** कालीन स्कूल आधुनिक व्यवस्था या पद्धति के नहीं थे। वे विकेंद्रित थे और प्रायः अध्यापक के घर में ही चलते थे। छात्र एक निश्चित पाठ्यक्रम वाले स्कूल में जाने के बजाय अपनी पसंद के अध्यापकों के पास पढ़ने जाते थे इससे अत्यधिक विविधता की गुंजाइश बनती थी, लेकिन इससे गुणवत्ता का स्तर भी विविध होता था।

11.3.1 प्रारंभिक प्रयास

यह एक रोचक तथ्य है कि मेजी पुर्नस्थापना के साथ, और देश के गृह युद्ध और क्रांति की गड़बड़ी में फंसे होने पर भी, सरकार ने "हमारे मानव संसाधनों के परिष्कार" के लिये ये स्कूल खोले। 1869 में टोक्यो में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी और 1871 में एक शिक्षा मंत्रालय कायम किया गया। 1872 में सरकार ने एक शिक्षा अधिनियम जारी किया जिसमें देश को आठ विश्वविद्यालय जनपदों में बांटा गया और इनका फिर बत्तीस माध्यमिक स्कूल जनपदों में उप विभाजन किया गया। माध्यमिक स्कूल जनपदों को एक बार फिर दो सौ दस प्राथमिक स्कूल जनपदों में बांटा गया। इस व्यवस्था के बाहर सरकार ने कृषि महाविद्यालय और वाणिज्यिक अध्ययन केंद्र जैसे विशेष स्कूलों और विश्वविद्यालयों की भी स्थापना की।

मेजी कार्यक्रम एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम था, लेकिन इसके सामने वित्तीय कठिनाइयां थीं, दूसरे देशों से सीखने के साथ इसमें और भी समज्जन और बदलाव हुए। शिक्षा बजट का एक बड़ा हिस्सा छात्रों को

विदेशों में पढ़ने भेजने में खर्च हो जाता था। उदाहरण के लिये, 1873 में कुल 800,000 येन में से 100,000 येन विदेशों में पढ़ाई के लिये थे।

शिक्षा अधिनियम, 1872, में जिस अर्थव्यवस्था को रखा गया था वह फ्रांसीसी व्यवस्था के नमूने पर आधारित होते हुए भी महत्वपूर्ण तरीकों से उससे भिन्न थी। जापान में यह एकपंथीय व्यवस्था थी जिसमें प्राथमिक शिक्षा मुफ्त थी, जबकि फ्रांस में द्विपंथीय, व्यवस्था थी जिसमें 1933 तक प्राथमिक शिक्षा पर चर्च (धार्मिक संस्था) का नियंत्रण रहा। लेकिन, इस व्यवस्था के विरोध में दंगे हुए। जनता को इन स्कूलों की स्थापना और संचालन में आने वाली लागत का एक बड़ा हिस्सा अपनी जेबों से देना होता था, और उन्हें यह बोझ बहुत भारी लगता था। 1873 में स्कूलों को दी जाने वाली सरकारी सहायता कुल बजट का केवल 12 प्रतिशत थी।

नयी शिक्षा व्यवस्था का वित्तीय बोझ विरोध का एक कारण था। इस नयी व्यवस्था को चलाने वाले अध्यापक और सामग्री भी अपर्याप्त साबित हुई। पाठ्य पुस्तकें बहुत ही कम थीं और जो पाठ्य पुस्तके थीं भी उनके विषय में अध्यापकों को वास्तव में यह ज्ञान ही नहीं था कि उनका प्रयोग कैसे करें। 1876 में 52,000 अध्यापकों में से केवल 1/6 को ही नयी व्यवस्था के तहत प्रशिक्षित किया गया था।

अंतिम बात जीवन के और पक्षों की तरह शिक्षा का पश्चिमीकरण किये जाने पर भी प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई। दंगों का लक्ष्य केवल वित्तीय बोझ ही नहीं था, बल्कि जार्ज के कलैंडर का थोपा जाना भी था।

सन् 1875 में, अमेरिकी विचारों से प्रभावित एक शिक्षा अध्यादेश ने कुछ बदलावों की नींव रखी जिसने और अधिक विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता को जन्म दिया। इन सुधारों की नींव उस समय रखी गयी जब जनाधिकार आंदोलन और मजबूत हो रहा था और पश्चिमीकरण के विरुद्ध लहर बढ़ रही थी और विचारक परंपरागत मूल्यों पर और अधिक जोर देने की मांग कर रहे थे। सुधार के ये प्रयास इन समस्याओं से निपट नहीं पाये और असफल रहे।

11.3.2 मंत्रिमंडल के अधीन सुधार

सन् 1885 में मंत्रिमंडल व्यवस्था की शुरुआत हुई और मोरी आरिनोरी पहला शिक्षा मंत्री बना। प्रशायी तरीकों से प्रभावित मोरी शिक्षा के विषय में हमेशा चिंतित रहा था। वह शिक्षा को राष्ट्र के विकास से घनिष्ठता से जुड़ा मानता था। उसने लिखा: "तमाम स्कूलों के प्रशासन में, यह ध्यान में रखा जाना चाहिये, कि जो कुछ करना है वह छात्रों के लिये नहीं है, बल्कि देश के लिये है।" इस तरह, लोगों को आज्ञाकारी भी होना चाहिये, और प्रशिक्षित भी, मोरी ने लोगों को सुशिक्षित करने की आवश्यकता को माना, लेकिन उसने यह भी समझा कि आलोचना की भावना राज्य के विरुद्ध भी मोड़ी जा सकती थी और सरकारी व्यवस्था के लिये खतरा पैदा कर सकती थी। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिये मोरी के सुधारों में एक दोहरा ढांचा कायम किया गया।

स्कूली शिक्षा को राजनीतिक उद्देश्यों के अधीन रखा गया और राजभक्ति और देशभक्ति की भावना बनाने पर जोर दिया गया।

दूसरी ओर, विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा अपेक्षाकृत स्वतंत्र रखी गयी और उच्च स्तर के अनुसंधान और स्नातक प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया गया।

टोक्यो विश्वविद्यालय की स्थापना 1877 में हुई थी लेकिन 1886 में शाही विश्वविद्यालयों की एक व्यवस्था कायम की गयी और टोक्यो विश्वविद्यालय टोक्यो शाही विश्वविद्यालय बन गया। राज्य ने एक उपयुक्त व्यवस्था बनाने को अत्यधिक महत्व दिया। दीएत के लिये शिक्षा पर बहुत नियंत्रण रख पाना संभव नहीं था क्योंकि इसे राज्य के प्रशासनिक ढांचे में रखा गया था। इसका यह अर्थ होता था कि शिक्षा भी सम्राट के नियंत्रण में थी। 1883 में, जब यामागाता अरितोमो प्रधानमंत्री था तब उसने एक अध्यादेश जारी करके यह आवश्यक कर दिया था कि बुनियादी शिक्षा कानून में कोई भी बदलाव करने से पहले प्रिवी कौंसिल (सर्वोच्च न्यायालय) की स्वीकृति ली जाये। 1913 तक पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित करने का विशिष्ट अधिकार राज्य के हाथों में आ चुका था।

11.4 रूढ़िवादी और शैक्षिक सुधार

शैक्षिक सुधार मेजी राज्य द्वारा एक केंद्र-केंद्रित राजनीतिक ढांचे के निर्माण का अनिवार्य अंग थे और उनमें

विनीत और आज्ञाकारी नागरिक ढालने की इच्छा परिलक्षित होती थी। किन मूल्यों पर जोर दिया जाये, इस सवाल को लेकर एक बहस उठ खड़ी हुई और इस सिलसिले में रूढ़िवादियों और परंपरावादियों ने देशज (जापान के अपने) मूल्यों और विश्वासों पर जोर दिया। अंधाधुंध पश्चिमीकरण की प्रतिक्रिया हुई और मेजी सुधारों का समर्थन कर चुके कई व्यक्तियों ने अब बदलाव की दिशा और तरीके पर सवाल उठाया।

11.4.1 शाही राजाज्ञा

सन् 1890 में शिक्षा पर सम्राट की ओर से एक राजाज्ञा जारी की गयी। इस दस्तावेज में रूढ़िवादी और परंपरावादी तर्क को बहुत स्पष्टता से रखा गया। राजाज्ञा का प्रारूप मोतूदा एकू और नीशिमुरा शिगेकी ने तैयार किया था। मोतूदा सम्राट का कन्फ्यूशियसवादी शिक्षक था। नीशिमुरा भी कन्फ्यूशियसवादी था। इन दोनों ने रूढ़िवादी दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति दी, जो पश्चिमी तरीकों को पूर्वी नैतिकता के साथ मिलाने के पहले के दृष्टिकोण से मिलता-जुलता था। सम्राट के शिक्षक की हैसियत से मोतूदा कन्फ्यूशियसवादी शिक्षण को हटा कर उसकी जगह नैतिकता पर अमेरिकी और फ्रांसीसी किताबों को लाने के विरुद्ध अभियान चलाता रहा था। मोतूदा अपने तर्क के समर्थन में सम्राट का भी यह कह उपयोग करता था कि इससे सम्राट भी बहुत परेशान था। 1875 की एक राजाज्ञा ''शिक्षा के महान सिद्धांत'' (क्योगाकूताइशी) में उसने तर्क दिया था कि पश्चिमीकरण के पोषक अपने आप में एक विदेशी सभ्यता ग्रहण करते हैं जिसके मूल्य केवल तथ्यों को एकत्र करना और तकनीक है, इस तरह वे शिष्टता के नियमों का उल्लंघन करते और हमारे पारंपरिक तरीकों को हानि पहुंचाते हैं। उसका मानना था कि जापान को राजभक्ति और पुत्रोचित या पितृवत पवित्रता के अपने मूल्यों की प्रधानता को फिर से जोरदार ढंग से आगे रखना चाहिये।

इस वक्तव्य के बाद ही शिक्षा के केंद्रीकरण में वृद्धि हुई और छात्रों और अध्यापकों को राजनीतिक सभाओं में जाने की मनाही हो गयी। मोतूदा के दृष्टिकोण को शासक अल्पतंत्र के भीतर पूरा समर्थन नहीं मिला। इतो हिरोबूमी संवैधानिक साम्राज्यिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता था और वह प्रत्यक्ष शाही राज के पक्ष में मोतूदा के तर्क का विरोधी था।

प्रारंभ में मेराकुशा में रहे, और ''सभ्यता और प्रबुद्धता'' के लागू किये जाने का समर्थन कर चुके नीशिमुरा शिगेकी ने अब पश्चिमी विचारों द्वारा संशोधित कन्फ्यूशियसवादी विचारों का प्रकाशन शुरू कर दिया था। 1886 में प्रकाशित एक किताब ''जापानी नैतिकता पर प्रवचन'' में उसने यह मांग की कि उन बुनियादी कन्फ्युशियसवादी मूल्यों को फिर से स्थापित किया जाये जो जापानी संस्कृति का अभिन्न अंग थे, और इस कन्फ्यूशियसवादी ढांचे को सहारा और मजबूती देने के लिये चुनिंदा पश्चिमी विचारों का उपयोग किया जाये।

सन् 1889 में मोरी की हत्या हो गयी और मोतूदा और नीशिमुरा सम्राट से एक ''पवित्र राजाज्ञा'' जारी करवाने में सफल रहे। यह राजाज्ञा पहला **दीएत** खुलने से पहले जारी कर दी गयी थी। शाही राजाज्ञा में यह घोषणा की गयी थी :

> ''राजभक्ति और पुत्रोचित या पितृवत पवित्रता में सदा एकताबद्ध हमारी प्रजा ने पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी सुंदरता का उदाहरण पेश किया है। यह हमारे साम्राज्य के मूलभूत चरित्र की महिमा है, और इसमें हमारी शिक्षा का स्रोत निहित है। ''

आगे इस राजाज्ञा में लोगों को बढ़ावा दिया गया कि वे ''जनता की भलाई को आगे बढ़ायें और आम हितों को बढ़ावा दें'', संविधान का आदर करें, राज्य के प्रति अपने जीवन अर्पित कर दें और ''इस तरह स्वर्ग और पृथ्वी के समवयस्क (या उनके जितने पुराने) हमारे शाही सिंहासन की समृद्धता की रक्षा करें और उसे बनाये रखें।''

यह दस्तावेज रूढ़िवादी विचारों की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति बन गया। इसे स्कूलों और समाज में भी एक पवित्र ग्रंथ की तरह मान दिया जाता था। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे पहले निजी दरबारी अनुष्ठान रहे शाही अनुष्ठानों ने राष्ट्रीय अनुष्ठानों का रूप लिया शिक्षा पर राजाज्ञा को श्रद्धा के साथ लिया जाने लगा। 1891 में पर्वों और अवकाशों पर प्राथमिक स्कूलों के अनुष्ठानों के लिए विनियमों में यहं प्रावधान रखा गया कि छात्र और स्कूली कर्मचारी शाही चित्र के आगे नमन करें, राजाज्ञा का पाठ करें और राष्ट्रीय गान गायें। सम्राट लोगों को राजभक्त नागरिकों के रूप में बांधने वाला सूत्र था।

11.4.2 रूढ़िवादी तर्क

रूढ़िवादियों में परंपरागत मूल्यों को बनाये रखने के लिए कई तर्क आगे किये गये। दार्शनिक इनोवे तेत्सुजिसे

ने यह दिखाते हुए परंपरा का पक्ष लेने का प्रयास किया कि यह विवेकपूर्ण और आवश्यक थी, लेकिन अन्य लोगों ने इस तरह के तर्कों का विरोध किया। **नीहोन** (जापान) अखबार के संपादक, कुगा कत्सुनान, ने इस विचार को स्वीकारने के विरुद्ध तर्क दिया कि जापान को भी उसी तरह विकास करना चाहिए जैसे पश्चिम ने विकास किया था। उसने इस तर्क की आलोचना की कि विकास के सार्वभौमिक नियम थे और यह तर्क दिया कि इस दृष्टिकोण की वकालत करने वाले यह नहीं समझते थे कि प्रत्येक समाज अपने ही इतिहास और परंपराओं के अनुसार विकास करता है। प्रत्येक राष्ट्र की एक जीवंत संस्कृति थी जो उसके अवाम के रहने और सोचने के ढंग में परिलक्षित होती थी। कुगा की दृष्टि में पुत्रोचित या पितृवत पवित्रता या राजभक्ति के लिये किसी बौद्धिक सफाई देने या शैक्षिक बचाव की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि ये तो इसलिये उचित ठहरते थे क्योंकि ये जापान की इतिहास प्रसिद्ध प्रथाएं थीं।

कुगा कत्सुनान ने किसी देश की सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की महत्ता और आवश्यकता के पक्ष में भी तर्क दिये। किसी राष्ट्र की परंपराएं वह आधार देती हैं जिस पर इसकी जनता को एकताबद्ध किया जा सकता है और ये मूल्य समाज को बांधते और राष्ट्र को मजबूती देते हैं। किसी राष्ट्र को हराने का तरीका केवल ताकत के जरिये ही नहीं होता, क्योंकि अगर कोई राष्ट्र अपनी ऐतिहासिक परंपराएं खो बैठता है तो वह अपनी स्वाधीनता भी गंवा देता है। यह कुगा का एक प्रेरक और मजबूत तर्क था।

राजाज्ञा जारी होने के समय एक ईसाई दार्शनिक, उचिमुरा कांजो, ने दस्तावेज को नमन करने से इंकार कर दिया और उसने धर्म और शिक्षा के बीच टकराव के विषय में एक निबंध लिखा। उचिमुरा का यह तर्क था कि वह एक ईसाई था और वह मनुष्य के सार्वभौमिक भाईचारे में अपने विश्वास को इस विचार से नहीं मिला सकता था कि सम्राट एक दैवीय विभूति था। लेकिन कुगा ने यह तर्क भी दिया कि अगर ईसाई धर्म को स्वदेशी रूप दे दिया जाता है और वह बौद्ध धर्म की तरह जापानी परंपरा का अंग बन जाता है, तब किसी प्रकार का कोई द्वंद्व नहीं होगा। उसे ईसाई धर्म के विदेशी ताने-बाने के कारण उस पर आपत्ति थी।

बुनमे काईका की वकालत करने वालों और रूढ़िवादियों के बीच बहस राजनीतिक शून्य की स्थिति में नहीं चली, बल्कि उस समय भी चल रही थी जब जापान विदेशी ताकतों के साथ अपने संबंधों में समानता प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। बकुफु के दौरान थोपी गयी असमान संधियां अभी भी प्रभावी थीं और विदेशियों को कानूनी और आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त थे। मेजी सरकार भी बातचीत के जरिये इन संधियों को समाप्त करने के विषय में अत्यधिक चिंतित थी और इसके लिये उसने एक आधुनिक राष्ट्र की रचना करने का बीड़ा उठाया ताकि वह यह दावा कर सके कि वे पश्चिमी देशों की बराबरी पर थे।

इस संदर्भ में ये चिंतक इस बुनियादी सवाल का जवाब देने का प्रयास कर रहे थे कि सामाजिक प्रगति का क्या अर्थ था। उनमें से अधिकांश इस विचार को स्वीकार करते थे कि प्रगति आवश्यक थी, लेकिन क्या इसका अर्थ यह था कि सभी समाज एक से हो जायेंगे या यह कि प्रत्येक समाज अपने सार को बचाये रखेगा, ये वे सवाल थे जो बहस का विषय थे। बेशक यह बहस की जा सकती है कि किसी समाज का सार क्या है और क्या समय के साथ यह भी विकसित होता और बदलता है।

सेक्योशा नाम की एक संस्था के नेता और नीहॉनजीन (जापानी) पत्रिका के संपादक, मिया केसेत्सुरे, ने राष्ट्रीय सार को बचाने की वकालत की। 1891 में लिखित अपनी सबसे प्रभावशाली किताब 'जापानी लोग: अच्छाई और सुंदरता' में उसने यह तर्क दिया कि दुनिया की सभ्यता का विकास प्रतिस्पर्धा के जरिये हुआ था और प्रत्येक राष्ट्र के पास अपनी विशिष्ट प्रतिभाएं थीं। आज पश्चिमी देश सबसे उन्नत हो सकते हैं लेकिन दुनिया की प्रगति तभी होगी जब दूसरी संस्कृतियां और मूल्य फले-फूलेंगे। मियाके की दृष्टि में अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना बुनियादी तौर पर दुनिया की प्रगति के लिये काम करने के बराबर था।

मियाके ने सत्य, सुंदरता और भलाई को विश्व सभ्यता के अंतिम लक्ष्य बताया। इस दिशा में जापानी लोग :
- एशिया संबंधी ज्ञान को, जिसका यूरोप में अभाव था, आगे कर सकते थे
- पश्चिमी साम्राज्यवाद से एशिया की रक्षा करके भलाई का प्रचार कर सकते थे, और
- अपने अनूठे सौंदर्य बोध के कारण, जो कि पश्चिमी अवधारणा से भिन्न था, विश्व सभ्यता में योगदान कर सकते थे।

11.4.3 रूढ़िवादियों का प्रभाव

रूढ़िवादियों की स्थिति जनसाधारण में प्रभावशाली थी, और नीतियों पर भी इसका काफी प्रभाव था। उदाहरण के लिये, सरकार नागरिक संहिताओं में संशोधन की प्रक्रिया को चला रही थी, और रूढ़िवादियों के

विरोध ने न केवल नागरिक संहिता (1898) को, बल्कि वाणिज्यिक संहिता (1899) को भी विलंबित कर दिया।

जापानी परंपरा की तलाश और देशज मूल्यों के संरक्षण का महत्व केवल बुद्धिजीवियों और राजनीतिकों की दुनिया तक ही सीमित नहीं था, बल्कि कला में भी इसकी तलाश होती थी। ओकाकुरा तेनशिन ने अर्नेष्ट फेनेलोसा की मदद से जापानी कला में रुचि को फिर से जगाने का प्रयास किया। ओकाकुरा की ललित कला विश्वविद्यालय की स्थापना करने और एशियाई कला का संग्रहण और अध्ययन करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उसके प्रसिद्ध वक्तव्य ''एशिया एक है'' ने अनेक लोगों को एशियाई एकता के लिये काम करने की प्रेरणा दी। ओकाकुरा और फेनेलोसा पश्चिमी चित्रकला के प्रति समूची आसक्ति को हटाने और अपने समकालीनों की दृष्टि को अपनी कला की सुंदरता और शक्ति को देखने के लिये और अपने सौंदर्यवादी मूल्यों की संपदा के गुणों को सराहने के लिये मोड़ने में सहायक रहे।

शाही संस्था में समाविष्ट मूल्यों के प्रति रूढिवादियों के जुड़ाव को, इतो हिरोबूमी के शब्दों में ''शाही घराने को राष्ट्र की आधारशिला'' के रूप में उपयोग करने की मेजी सरकार की राजनीतिक नीतियों के द्वारा और बल मिला। ओकुमा के निष्कासन के समय, 1881 के संकट के बाद मेजी नेता जनाधिकार आंदोलन की जनतंत्र की राजनीतिक मांगों से चिंतित थे, और उन्होंने विकास और औद्योगीकरण की आवश्यकता को संतुलित करने और साथ ही सामाजिक व्यवस्था का संरक्षण करने की कोशिश की। इतो ने स्वयं यूरोप की यात्रा की और उसे रूढ़िवादी यूरोपीय चिंतकों से प्रेरणा मिली। रूढ़िवादियों के मोतूदा गुट की सम्राट के प्रति रहस्यवादी दृष्टि थी जिसका विकास शाही घराने के जरिये राजभक्ति और पूर्वज पूजा को आपस में जोड़ने वाले होजुमे नोबुशिगे ने किया था।

समाज में भी सम्राट की आलोचना न सहने की प्रवृत्ति बढ़ रही थी और कुने कुनिताके नामक एक विद्यार्थी को टोक्यो विश्वविद्यालय से इसलिये निकाल दिया गया क्योंकि उसे शिंतो को आदिम ढंग की पूजा बताया था। कई स्कूली किताबों में सम्राट को महिमामंडित किया गया था और 1903 से शिक्षण मंत्रालय ने नैतिकता की किताबों की सामग्री-संग्रहण का काम अपने हाथों में ले लिया जिससे वह किताबों की विषय वस्तु पर नियंत्रण रख सकें।

11.4.4 समाजवादी दृष्टिकोण

बुनमे काईका के सार्वभौमिक विचारों से जो मोहभंग हुआ उससे पारंपरिक मूल्यों में व्यापक रुचि की स्थिति बनी। लेकिन धीरे-धीरे जब इन विचारों का उपयोग सुधार और बदलाव रोकने के लिये बहानों की तरह होने लगा तो अनेक रूढ़िवादियों, और उदारवादियों का भी, मोहभंग हो गया। 1880 के दशक के अंत में औद्योगिक विकास की प्रगति के साथ श्रमिक संघों और श्रम संगठनों का उदय हुआ और एक समाजवादी आंदोलन खड़ा हुआ। जापानी इतिहासकार, मत्सुजावा कोयो ने तर्क दिया है कि मेजी कालीन जापान के पहले समाजवादी अमेरिका में समाजवाद के अपने अनुभवों से प्रभावित थे। बाद के किनोशिता नाओए जैसे समाजवादी जनाधिकार आंदोलन के विचारों से प्रभावित थे और उनमें से कई पत्रकारिता करते थे। मेजी कालीन समाजवादियों के अंतिम गुट के सदस्यों ने जिनका जन्म 1880 के दशक में हुआ था, क्षेत्रीय आंदोलनों के प्रभाव का सबसे पहले अनुभव किया, इनमें ओसुगी सकाए जैसे समाजवादी शामिल थे।

ये समाजवादी विकास के तनावों और गरीबी की समस्याओं से प्रभावित थे। उन्होंने अमीरों और गरीबों के बीच के अंतरों को कम करने के तरीके ढूंढने का प्रयास किया। वे व्यापक तौर पर इस बात पर सहमत थे कि मेजी पुर्नस्थापना एक प्रगतिशील क्रांति थी जिसने सामंतवाद को उखाड़ फेंका था और स्वतंत्रता और समानता स्थापित की थी। 1903 में कोतोकू शुसुई और प्रसिद्ध **मेजी** समाजवादी कातायामा सेन ने समाजवाद के सार पर किताबें लिखीं। दोनों समाजवादी एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था कायम करने के विषय में चिंतित थे जिससे आर्थिक असमानता दूर हो जाये। इस उद्देश्य से उन्होंने समान वितरण और उत्पादन सुविधाओं के सार्वजनिक स्वामित्व की वकालत की। वे यह भी मानते थे कि इसे शांतिपूर्ण साधनों से प्राप्त किया जा सकता था, और इसलिये उन्होंने प्रत्येक स्थान पर समान मताधिकार कानून का समर्थन किया और आम शिक्षा में वृद्धि के लिये काम किया। अंत में समाजवादियों पर सामाजिक डार्विनवाद का भी प्रभाव पड़ा जो इतिहास को निरंतर वृद्धि और विकास की प्रक्रिया के रूप में देखता था। फिर भी, उनकी कमजोरी यह थी कि वे केवल एक छोटे वर्ग-मध्यम वर्ग-से अपनी बात कर रहे थे, और वे सामाजिक बदलाव लाने के लिये संगठनों का विकास करने में असफल रहे। जैसे बुनमे काईका की वकालत करने वाले रूढ़िवादियों के आगे तर्क नहीं रख पाये, उसी तरह समाजवादी, ईसाई और शांतिवादी गुट भी अपने विचारों का प्रसार करने में नाकाम रहे। चीन-जापान युद्ध (1894-95) में जापान द्वारा चीन के विरुद्ध अपनी जीत दर्ज कर लेने के बाद तो राष्ट्रवादी विचार और भी तीव्रता के साथ फैले।

11.4.5 अखिल एशियावाद

जापान की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वाधीनता के संरक्षण के लिये पश्चिमी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष के फलस्वरूप कुछ चिंतकों ने पश्चिम के विरुद्ध एक एशियाई गठबंधन के विषय में सोचा। ओकावा शुमे और किता इक्की जैसे चिंतकों का तर्क था कि जापान को चाहिए कि वह एशिया को स्वतंत्र कराने के लिये दूसरे एशियाई देशों के साथ मिलकर काम करे। उनका मानना था कि केवल इसी तरीके से जापान अपने आपको स्वतंत्र कर सकता था। जापान एशिया का एक अंग था और उसके समान मूल्यों और सांस्कृतिक परंपरा में इसका साझा था। उनमें से अनेक ने कोरियाईयों और चीनियों के साथ मिल कर इन देशों में क्रांति के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिये काम किया। मियाजाकी तोतेन ने सून यात सेन से भेंट की और वह उसके साथ 1911 की चीनी क्रांति के लिये काम करने चीन गया। सून स्वयं मेजी पुर्नस्थापना को चीन के पुनरुद्धार में पहला कदम और 1911 की क्रांति को दूसरा कदम मानते थे।

इन लोगों को, एशियाई एकता की वकालत करने के कारण, अखिल एशियावादी कहा जाता था। इन अखिल एशियावादियों के विचार को सैन्यवादियों ने बहुत आसानी से मोड़ दिया और उसका उपयोग जापानी विस्तारवाद के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिये कर लिया। उनके चिंतन में बहुत दोहरापन था और जब वे एक एशियाई गठबंधन की बात करते थे तो बहुत से लोग इसका यह अर्थ समझते थे कि जापान के नेतृत्व में गठबंधन की बात की जा रही थी।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित वक्तव्यों में से कौन से सही (√) हैं, और कौन से गलत (×) निशान लगायें।
   i) मोरी आरिनोरी शिक्षा को विकास के साथ जोड़ने के विरुद्ध था।
   ii) रूढ़िवादी पश्चिमी विचारों के अनुसरण के विरुद्ध थे।
   iii) पश्चिम के विरुद्ध एशियाईयों के गठबंधन के विचार का प्रयोग जापान के हितों को आगे बढ़ाने के लिये किया गया।
   iv) कुगा कत्सुनान का तर्क था कि जापान को पश्चिम के तरीके से ही विकास करना चाहिए।
   v) 1880 के दशक तक जापान में समाजवादी विचारों का प्रचार हो चुका था।

2) मेजी सरकार शिक्षा पर अधिक व्यय क्यों करती थी? पांच पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

3) रूढ़िवादियों के बुनियादी तर्क क्या थे? लगभग 15 पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

11.5 सारांश

मेजी काल के दौरान जापान में अनेक विचारों और विचारधाराओं का विकास हुआ, लेकिन उनमें से कई सरकारी पुरातन पंथ से आगे नहीं बढ़ पाये। इस दौरान राष्ट्रीयता का बोध भी बना। 1870 के दशक में फुंकुजावा युकिची ने लिखा था कि "जापान में सरकार तो थी, लेकिन कोई राष्ट्र नहीं था", क्योंकि उस का तर्क था कि केवल जन्म के आधार पर कोई नागरिक नहीं बन जाता, बल्कि उसके लिये राष्ट्र बोध बनाना आवश्यक था। **मेजी** अल्पतंत्र राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र के विचार को शाही घराने से जोड़ता था और जनता को सम्राट के प्रति पुत्रेचित या पितृवत पवित्रता और राजभक्ति के बंधनों के जरिये राज्य से बांधता था।

जनाधिकार आंदोलन से संबंधित नकाए चेमिन और उएकी एमोरी जैसे विचारक जनता को एक जनतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में शामिल करके राष्ट्र बोध बनाना चाहते थे। उनका तर्क था कि जापान की अपनी रक्षा करने की वास्तविक शक्ति केवल एक मजबूत सेना या संपन्न अर्थव्यवस्था में नहीं, बल्कि इसकी जनता की शक्ति और राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता में निहित थी।

समाजवादी मेजी पुर्नस्थापना द्वारा लायी गयी राजनीतिक समानता को पूरा करने के लिये आर्थिक असमानता को समाप्त करने की आवश्यकता पर जोर देते थे। उनका मानना था कि जब तक सामाजिक समस्याएं समाज को विभाजित किये रहेंगी, तब तक जनवादी विकास संभव नहीं होगा।

इतिहासकारों ने विभिन्न अंशों में सहानुभूति रखते हुए मेजी अल्पतंत्र के कार्यों का मूल्यांकन किया है। ई. एच. नामर्न का तर्क था कि जिस गति से सुधारों को लागू किया गया उसमें जनवादी और उदारवादी सुधार की उपेक्षा हुई, लेकिन बाद में वह और भी आलोचक हो गया। दूसरी और जार्ज अकिता मेजी अल्पतंत्र को प्रबुद्ध नेताओं के रूप में देखता है जिन्होंने वातावरण की ओर से बाध्य न होने पर भी उदारवादी सुधार लागू किये।

11.6 शब्दावली

बुनमे काईका : सभ्यता और प्रबुद्धता। एक नारे के रूप में इसकी वकालत उन लोगों ने की जो सार्वभौमिक सत्यों की खोज और विज्ञान और बौद्धिकता के प्रसार के पश्चिमी आदर्शों से प्रेरित थे।

राजाज्ञा : सम्राट के नाम पर जारी किया गया आदेश

11.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 11.2.1 देखिए
2) उपभाग 11.2.1 तथा 11.2.3 देखिए

बोध प्रश्न 2

1) i) × ii) √ iii) √ iv) × v) √
2) सरकार को यह बोध हुआ कि शिक्षा में निवेश जापान के आधुनिकीकरण के लिए आवश्यक है। उपभाग 11.3.1 देखिए।
3) उपभाग 11.4.2 देखिए।